Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 08:07

: □□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□-□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□-□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ : □□ □□ 43 □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ : □□□-□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ : □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ -□□ :

□□□□□□ □□□□□□

□□□□□ : बहरहाल, तय किया था कि पत्रकारिता में मैंने अपने 38 बरस खपाये हैं। मेरा पहला लेख दैनिक स्‍वतंत्र भारत में प्रकाशित हुआ था अक्‍टूबर-1980 में। नवम्‍बर-80 से दैनिक अमृतप्रभात, दैनिक नवजीवन के साथ ही साथ अमर उजाला और जनसत्‍ता तथा दिनमान वगैरह में भी मैं नियमित रूप से छपने लगा था। और उसके बाद 2 जून-82 से साप्‍ताहिक सहारा में प्रूफ-रीडर के तौर पर नियमित नौकरी शुरू कर दी। आज पूरे दौरान आधा वक्‍त तो नौकरी में खपा, जबकि बाकी आधा वक्‍त बेरोजगारी में जीवन को समझने-देखने में लग रहा है। यानी मुझे दोनों ही अनुभव हैं, रोजगार में कठोर परिश्रम जनित अनुभव और कठोर बेरोजगारी जनित दुर्धष साहस। तो संकल्‍प ले लिया कि अब नौकरी के बजाय उस क्षेत्र में पूरा जीवन अर्पित कर दूंगा, जिसने मुझे इंसान बनाने की कोशिश की। यानी पत्रकारिता। पूरा जीवन अर्पित कर दूंगा। जहां का अन्‍न-रोटी खायी है, वहां की सेवा करूंगा। शब्‍द-सेवा करूंगा, वाक्‍य-संयोजन संवारूंगा। नि:शुल्‍क। हां, सबसे मांगूंगा जरूर, मगर दक्षिणा-दान या भिक्षा के तौर पर। पारिश्रमिक के तौर पर हर्गिज नहीं।

इसलिए तो मैंने मेरी बिटिया डॉट कॉम शुरू किया और उन खबरों पर काम किया, जो खबरों का धोखा होता है, गड़बड़-झाला। उन पर खुलासा करना शुरू किया, उनकी हरकतों को बेपर्द करना शुरू कर दिया। खास तौर पर ऐसे पत्रकारों और सम्‍पादकों को, जो खबर-समाचार जगत में कलंक हैं और उसे लगातार कलंकित करते ही रहते हैं। खबरों को दबाना, उसे मोड़ना-मरोड़ना, फर्जी खबर बुनना और उसे छापना, पत्रकारिता से इतर आगे कीचड़ में घुसना, ठेका-दलाली हासिल करना। ऐसे पत्रकार तो ऐसे भी हैं जो उगाही और रंगदारी तक उगाहते हैं, उन पर बेहिचक हमला करना शुरू कर यिा मैंने। मगर इसके साथ ही साथ उन पत्रकारों पर भी काम शुरू किया जो वाकई पत्रकारिता करते हैं, और समाचार-सेवा के तौर पर पत्रकारिता के साथ ही साथ अपने जीवन को भी धन्‍य करने के अभियान में जुटे हैं। मैंने ऐसे भी और वैसे भी लोगों को चिन्हित करना शुरू किया।

बांस -विकास योजना का उपयोग मुझ पर ही कर डाला

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 08:07

[illegible]

2 / 2